[This question paper contains 2 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 3701 **C**

Unique Paper Code : 12055302

Name of the Paper : Bhasha aur Samaj

Name of the Course : **Hindi (Hons.)**

Semester : III

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. भाषा और समाज के अंत: संबंधों को स्पष्ट कीजिए । (12)

अथवा

भाषा व्यवहार मानव संबंधों को किस तरह से अभिव्यक्त करता है। विस्तार से उल्लेख कीजिए।

2. भाषा समुदाय से क्या अभिप्राय है? दिल्ली महानगर के भाषा समुदाय की व्याख्या कीजिए। (12)

P.T.O.

अथवा

'भारत बहु भाषिक राष्ट्र है' - इस आधार पर इसकी बहुभाषिकता की स्थिति को स्पष्ट कीजिए।

3. भाषा और संस्कृति के अंत: संबंध पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

भाषाई अस्मिता से क्या समझते है? भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों की भाषा पर विचार कीजिए?

4. भाषा सर्वेक्षण का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

भाषा सर्वेक्षण के लिए भाषाई समुदाय तथा क्षेत्र विशेष का चुनाव किस प्रकार होता है स्पष्ट कीजिए।

5. **किन्हीं तीन** पर टिप्पणी कीजिए। (9,9,9)

(क) भाषा व्यवहार

(ख) भाषा और समाज

(ग) भाषा और जाति

(घ) बहुभाषिकता

(च) भाषाई अस्मिता

(छ) भाषा के नवीन प्रयोग

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4474 **C**

Unique Paper Code : 12051301

Name of the Paper : Hindi Sahitya Ka Itihas (Adhunik Kaal)

Name of the Course : **B.A. (Hons) Hindi - CBCS**

Semester : III

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्नों अनिवार्य हैं ।

1. मध्कालीन बोध और आधुनिक बोध में अंतर स्पष्ट करते हुए आधुनिक बोध को व्याख्यायित कीजिए।

अथवा

खड़ी बोली आंदोलन में महावीर प्रसाद द्विवेदी के योगदान की चर्चा कीजिए। (15)

P.T.O.

2. हिंदी उपन्यास का विकासात्मक परिचय दीजिए।

अथवा

हिन्दी नाटक की विकास-यथात्रा का विवेचन कीजिए। (15)

3. प्रगतिवादी काव्य के परिवेश और प्रवृतियों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

नई कविता नवीन भाव बोध और नवीन शिल्प विधान की कविता है- इस आधार पर नई कविता की मूल प्रवृत्तियों का उद्घाटन कीजिए। (15)

4. साठोत्तरी कविता की प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

स्त्री विमर्श, स्त्री स्वातंत्र्य के किन बिन्दुओं पर आधारित हैं- विस्तारपूर्वक उत्तर दीजिए। (15)

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : (8,7)

(क) नवजागरण और भारतेन्दु युग

(ख) हिन्दी आलोचना

(ग) छायावाद

(घ) साहित्यिक पत्रकारिता

(5000)

3

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

C

Sr. No. of Question Paper : 4497

Unique Paper Code : 12051302

Name of the Paper : हिन्दी कविता (आधुनिक काल - छायावाद तक)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – CBCS**

Semester : III

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8,7)

(क) देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार;
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से

जो मार खा रोयी नहीं,

सजा सहज सितार,

सुनी मैंने वह नहीं

जो थी सुनी झंकार

अथवा

जागी किसकी वाष्पराशि, जो सूने में सोती थी?

किसकी स्मृति के बीज उगे ये, सृष्टि जिन्हें बोती थी?

अरी वृष्टि, ऐसी ही उनकी दया-दृष्टि रोती थी,

विश्व-वेदना की ऐसी ही चमक उन्हें होती थी।

(ख) आह रे, वह व्यतीत जीवन !

तुम्हारी आँखों का बचपन !

साथ ले सहचर सरस वसन्त,

चंक्रमण करता मधुर दिगन्त,

गूँजता किलकारी निस्वन,

घपुलक उठता तब मलय-पवन।

अथवा

राजा रंक से बना करके यश, मान, मुकुट पहना करके,

बाँहों पर मुझे उठा करके, सामने जगत के ला करके,

करतब क्या-क्या न किया उसने, मुझको नव-जन्म दिया उसने।

2. "सखि! वे मुझसे कहकर जाते" गीत का मूल प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

यशोधरा की कथावस्तु का विवेचन कीजिए।

3. पाठ्यक्रम में संकलित "लहर" की कविताओं के आधार पर जयशंकर प्रसाद के काव्य में प्रेम और सौन्दर्य का वर्णन कीजिए। (12)

अथवा

"अरी वरुणा की शांत कछार" कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

4. निराला की काव्यभाषा की प्रमुख विशेषताओं पर सौदाहरण विचार कीजिए। (12)

अथवा

'वह तोड़ती पत्थर' कविता की मूल संवेदना का वर्णन कीजिए।

5. राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा में सुभद्रा कुमारी चौहान के योगदान का विवेचन कीजिए। (12)

अथवा

"रश्मिरथी" के तृतीय सर्ग का मूल प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिये।

6. निम्नलिखित में से किन्हीं दो का निर्देशानुसार रचना-कौशल स्पष्ट कीजिए? (6,6)

(क) मैं उन्मत्त प्रेम की लोभी
हृदय दिखाने आई हूँ,
जो कुछ है, वह यही पास है,
इसे चढ़ाने आई हूँ। (भक्तिभावना)

(ख) दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या-सुंदरी
परी-सी धीरे धीरे धीरे। (बिम्ब और प्रतीक योजना)

(ग) जहाँ साँझ-सी जीवन-छाया,
ढो ले अपनी कोमल-काया,
नील नयन से ढुलकाती हो,
ताराओं की पाँति घनी रे! (भावार्थ)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

C

Sr. No. of Question Paper : 4520

Unique Paper Code : 12051303

Name of the Paper : Hindi Kahani

Name of the Course : **B.A.(H) Hindi - CBCS**

Semester : III

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'उसने कहा था' कहानी में निहित मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

कहानी के तत्वों के आधार पर 'छोटा जादूगर' कहानी की समीक्षा कीजिए।

2. 'तीसरी कसम' कहानी के मूल भाव को स्पष्ट कीजिए। (12)

P.T.O.

अथवा

'चीफ की दावत' कहानी के आधार पर शामनाथ का चरित्र - चित्रण कीजिए।

3. 'वापसी' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

'माया का मर्म' कहानी व्यक्ति की सूक्ष्म संवेदना व्यक्त करती है - इस कथन पर विचार कीजिए।

4. 'दोपहर का भोजन' कहानी का सार लिखिए। (12)

अथवा

'घुसपैठिये' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (9×3=27)

(क) सहसा जबरा ने किसी जानवर की आहत पाई। इस विशेष आत्मीयता ने उसमें एक नयी स्फूर्ति पैदा कर दी थी, जो हवा के ठंडे झोंकों को तुच्छ समझती थी। वह झटपट उठा और छतरी के बाहर आकर भोंकने लगा। हल्कू ने उसे कई बार चुभकारकर बुलाया; पर वह उसके पास न आया हार कर चारों तरफ

दौड़-दौड़ कर भोंकता रहा। एक क्षण के लिए आ भी जाता तो तुरंत ही फिर दौड़ पड़ता। कर्त्तव्य हृदय में अरमान की भाँति उछल रहा था।

अथवा

मैं कुछ बोला नहीं। मेरा मन जाने कैसे गम्भीर प्रेम के भाव से आशुतोष के प्रति उमड़ पड़ा था। मुझे ऐसा मालूम होता था कि ठीक इस समय आशुतोष को हमें अपनी सहानुभूति से वंचित नहीं करना चाहिए। बल्कि कुछ अतिरिक्त स्नेह इस समय बालक को मिलना चाहिए। मुझे यह एक भरी दुर्घटना मालूम होती थी।

(ख) गजाधर बाबू खुश थे, बहुत खुश। पैंतीस साल की नौकरी के बाद वह रिटायर होकर घर जा रहे थे। इन वर्षों में अधिकांश समय उन्होंने अकेले रह कर काटा था। उन अकेले क्षणों में उन्होंने इसी समय की कल्पना की थी, जब वह अपने परिवार के साथ रह सकेंगे। इसी आशा के सहारे वह अपने अभाव का बोझ ढो रहे थे।

अथवा

शामनाथ सिगरेट मुँह में रखे, सिकुड़ी आँखों से श्रीमती के चेहरे की ओर देखते हुए पल-भर सोचते रहे, फिर सिर हिलाकर बोले, "नहीं, मैं नहीं चाहता कि उस बुढ़िया का आना-जाना यहाँ फिर से शुरू हो। पहले ही बड़ी मुश्किल से बंद किया था। माँ

से कहें कि जल्दी ही खाना खा के शाम को ही अपनी कोठरी में चली जाएँ।

(ग) शरे ने जरा रूककर, घबराकर कहा - "नहीं - शाहनी। .. "शेरे के उत्तर की अनसुनी कर शाहनी जरा चिंतित स्वर से बोली, "जो कुछ भी हो रहा है, अच्छा नहीं। शेरे, आज शाहजी होते तो शायद कुछ बीच-बचाव करते। पर .. "शाहनी कहते-कहते रुक गई। आज क्या हो रहा है। शाहनी को लगा जैसे जी भर-भर आ रहा है।

अथवा

मनुष्य समझा रहा है - हम आप लोगों को हाथों हाथ लेंगे। अपने घर, मकान, झोपड़ों में रखेंगे, बस्तियों में बसाएंगे, कहीं भी जाएंगे तो आपको अपने साथ ले जाएंगे .. यहाँ न आप लोगों को दूसरे के आगे तनकर खड़ा होने का अधिकार है और न किसी को खड़ा होने के लिए एक बीते से ज्यादा जमीन दी गई है।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4035 C

Unique Paper Code : 12051501

Name of the Paper : Pashchatya Kavyashastra

Name of the Course : HINDI (Hons.)

Semester : V

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य है ।

1. अरस्तू के अनुकरण सिद्धांत का विवेचन कीजिए । (12)

अथवा

लोंजाइनस के उदात्त सिद्धांत को स्पष्ट कीजिए।

2. कॉलरिज के काव्यभाषा संबंधी मान्यताओं का परिचय दीजिए । (12)

P.T.O.

अथवा।

टी.एस.इलियट की परंपरा और वैयक्तिक प्रज्ञा संबंधी अवधारणा को स्पष्ट करें।

3. स्वच्छंदतावाद की अवधारणा पर प्रकाश डालें। (12)

अथवा

मार्क्सवादी आलोचना का सामान्य परिचय दीजिए।

4. बिम्ब को स्पष्ट करते हुए काव्य में उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

विसंगति और विडंबना की अवधारणा को उदाहरण सहित स्पष्ट करें।

5. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए। (4×3)

(क) त्रासदी

(ख) कॉलरीज का कल्पना सिद्धांत

(ग) फैन्टेसी

(घ) उत्तर संरचनावाद

(ङ) प्रतीक

6

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4076 **C**

Unique Paper Code : 12051502

Name of the Paper : हिन्दी नाटक/एकांकी

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi – CBCS**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (9×3=27)

(क) छोटे चित्त भीरु बुद्धि मन चंचल बिगत उछाह ।
उदर-भरन-रत, ईस विमुख सब भए प्रजा नरनाह ।।
इनसों कछु आस नहिं ये तो सब विधि बुद्धि-बलहीन ।
बिना एकता बुद्धि-कला के भए सबहि विधि दीन ।।

P.T.O.

अथवा

हा! भारतवर्ष को ऐसी मोहानिद्रा ने घेरा है कि अब इसके उठने की आशा नहीं। सच है, जो जान बूझकर सोता है उसे कोन जगा सकेगा? हा दैव। तेरे विचित्र चरित्र हैं, जो कल राज करता था वह आज जूते में टाँक उधार लगवाता है।

(ख) शास्त्रों में अनुकूल और प्रतिकूल दोनों तरह की बातें मिल सकती है परन्तु जिस प्रथा के लिए विधि और निषेध दोनों तरह की सूचनाएँ मिले, तो इतिहास की हि से वह उस काल में सम्भाव्य मानी जाएँगी। हाँ, समय-समय पर उनमें विरोध और सुधार हुए होंगे और होते रहेंगे। मुझे तो केवल यही देखना है कि इस घटना की संभावना इतिहास की दृष्टि से उचित है कि नहीं।

अथवा

अर्थ! आप बोलते क्यों नहीं? आप धर्म के नियामक जिन स्त्रियों को धर्मबन्ध में बांधकर, उनकी सम्मति के बिना आप उनका सब अधिकार छीन लेते हैं, तब क्या धर्म के पास कोई प्रतिकार-कोई संरक्षण नहीं रख छोड़ते, जिससे वे स्त्रियाँ अपनी आपति में अवलम्ब मांग सकें? क्या भविष्य के सहयोग की कोरी कल्पना से उन्हें आप संतुष्ट रहने की आज्ञा देकर विश्राम ले लेते हैं?

(ग) कौन कसूर भइल हमसे भैया

बिरवा गइल मुरझाय हो,

सींचत सींचत उसर सिरानी

नेकु नहीं हरिआय हो।

आपन खून पिरनवा न साथी

अंसुअन केहि पतिआय हो।

अथवा

सरदार साहब, राजा साहब, बाबू साहब, सबके साथ यही दिक्कत है। कम्बख्त जीवन की कला नहीं जानते; प्रियमान-से, निहत्थे फैजियों की तरह यह मौत तक खिसकते तक खिसकते जाते हैं, जब उन्होंने देखा कि मैं उन से भीख नहीं माँगता, उनके तलबे नहीं सहलाता, ग्रह नहीं बनाता, षड्यंत्र नहीं करता तो मुँह बा कर रह गये। जी हाँ, मुँह बा कर रह गये।

2. भारत दुर्दशा नाटक की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

नाटक के तत्त्वों के आधार पर भारत दुर्दशा का विश्लेषण कीजिए।

3. 'ध्रुवस्वामिनी' नायिका प्रधान नाटक है। समीक्षा कीजिए। (12)

P.T.O.

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक में चित्रित मूल समस्या पर प्रकाश डालिए।

4. 'बकरी' नाटक वर्तमान राजनीति परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक है। विश्लेषण कीजिए। (12)

अथवा

'बकरी' एक प्रतीकात्मक नाटक है। समीक्षा कीजिए।

5. 'सूखी डाली' एकांकी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

शिल्प की दृष्टि से 'तीन अपाहिज' एकांकी का विश्लेषण कीजिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4277

C

Unique Paper Code : 12057502

Name of the Paper : Hindi Bhasha Ka Vyavaharik Vyakaran

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. व्यंजन किसे कहते हैं? हिंदी व्यंजनों का वर्गीकरण कीजिए। (12)

अथवा

व्याकरण का अर्थ बताते हुए उसके महत्व पर प्रकाश डालिए।

2. स्रोत के आधार पर शब्द के भेद उदाहरण सहित लिखिए। (12)

P.T.O.

अथवा

विशेषण की परिभाषा देते हुए उसके प्रकारों का उदाहरण सहित उल्लेख कीजिए।

3. शब्द-निर्माण की प्रक्रिया में संधि और समास के महत्व पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

क्रिया की परिभाषा देते हुए सहायक क्रिया के भेद उदाहरण सहित लिखिए।

4. वाक्य को परिभाषित करते हुए रचना के आधार पर वाक्य के भेद लिखिए। (12)

अथवा

वाक्य संरचना के अंतर्गत 'अन्विति' के नियम लिखिए।

5. निर्देशानुसार निम्नलिखित के उत्तर दीजिए - (2×6=12)

(क) किन्हीं चार शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए :

महाकवी, परीभाषित, साशन, पददलीत, व्यवहरिक, कुटील, तकदिर, चरचित

(ख) 'आवट' और 'आलु' प्रत्यय से बनने वाले दो-दो शब्द लिखिए।

(ग) किन्हीं चार शब्दों का संधि विच्छेद कीजिए :

वीरांगना, अधिकांश, पुष्पांजलि, प्राणायाम, वृक्षारोपण, गजानन, न्यायाधीश, भोजनालय

(घ) किन्हीं चार का विग्रह करके समास बताइए :

अकाल पीड़ित, गिरिधर, अपना पराया, आजीवन, तिरंगा, अध्यपका, डाक गाड़ी, ऋण मुक्त

(ङ) किन्हीं चार का रूप परिवर्तन करके भाववाचक संज्ञा बनाइए :

इंसान, चोर, अपना, अच्छा, बच्चा, काटना, ऊपर, कटु

(च) वाक्य शुद्ध करके लिखिए :

(i) पुस्तक मेज पर रख्वा है।

(ii) वह लोग कहां रहता है?

(iii) मेरे तो यहां अनेकों लोग परिचित हैं।

(iv) आजकल दोस्त सबसे कम बहुत मिलते हैं।

6. टिप्पणी लिखिए : (8,7)

(क) स्वरों के भेद

अथवा

मात्राएँ

(ख) विराम-चिह्न

अथवा

वाक्य के अंग

8

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3012 **D**

Unique Paper Code : 2052101001

Name of the Paper : Hindi Kavita: Aadikal Evam Nirgunbhakti Kavya

हिंदी कविता : आदिकाल एवं निर्गुण-भक्ति काव्य

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi : DSC-1**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।
2. इस प्रश्न पत्र में दो पृष्ठ है।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (9×3=27)

(क) संगहें पान कम्मान राज। उभ्भरे अंग अंतर बिराज।।

आलिंग बुबि उर चंपि अप्प। बद्धेव तेज तामंस दप्प।।

कर धरे से धनु आनंद चित्त। बिछुर्यै मिल्यौ चिरकाल मित्त।।

कम्मान राज मिलि तेज ताय। अरिमंझिबिंटि मिलिमनु सहाय।।

P.T.O.

अथवा

देख-देख राधा-रूप अपारा।
अपरुब के विहि आनि मिलाओल खिति तल लाबनि-सार।
अंगहि अंग अनंग मुरछायत हेरए पड़ए अथीर।
मनमथ कोटि मथन करु जे जन से हेरि महि मधि गीर।
कत-कत लखिमी चरण-तल नेओछए रंगिनि हेरि विभोरि।
करु अभिलाख मनहि पद-पंकज अहोनिसि कोर अगोरि।

(ख) मूवाँ पीछै जिनि मिलै, कहै कबीरा राम।
पाथर घाटा लोह सब, (तब) पारस कौंणें काम।।
इस तन का दीवा करौं, बाती मेल्यूं जीव।
लोही सींचौ तेल ज्यूँ, कब मुख देखौं पीव।।

अथवा

कहा नर गरबसि थोरी बात।
मन दस नाज टका दस गठिया, टेढौ टेढौ जात।।टेक।।
कहा लै आयौ यहु धन कोऊ, कहा कोऊ लै जात।।
दिवस चारि की है पतिसाही, ज्यूं बनि हरियल पात।।
राजा भयौ गांव सौ पाये, टका लाख दंस ब्रात।।
रावन होत लंका को छत्रपति, पल मैं गई बिहात।।
माता पिता लोक सुत बनिता, अंत न चले संगात।।
कहै कबीर राम भजि बौरे, जनम अकारथ जात।।

(ग) खेलत मानसरोवर गईं। जाइ पाल पर ठाढ़ी भईं ।।
देखि सरोवर हँसै कुलेली। पदमावति सों कहहिं सहेली ।।
ए रानी! मन देखु विचारी। एहि नैहर रहना दिन चारी ।।
जौ लगि अहै पिता कर राजू। खेलि लेहु जो खेलहु आजू ।।
पुनि सासुर हम गवनव काली। कित हम, कित यह सरवर-पाली ।।
कित आवन पुनि अपने हाथा। कित मिलि कै खेलब एक साथा ।।
सासु ननद बोलिन्ह जिउ लेहीं। दारुन ससुर न निसरै देहीं ।।
पिउ पियार सिर ऊपर, पुनि सो करै दहुँ काह।
दहुँ सुख राखै की दुख, दहुँ कस जनम निबाह ।।

अथवा

कहा मानसर चाह सो पाई। पारस-रूप इहाँ लगि आई ।।
भा निरमल तिन्ह पायँन्ह परसे। पावा रूप रूप के दरसे ।।
मलय-समीर बास तन आई। भा सीतल, गै तपनि बुझाई ।।
न जनौं कौन पौन लेइ आवा। पुन्य-दसा भै पाप गँवावा ।।
ततखन हार बेगि उतिराना। पावा सखिन्ह चंद बिहँसाना ।।
बिगसा कुमुद देखि ससि-रेखा। भै तहँ ओप जहाँ जोइ देखा ।।
पावा रूप रूप जस चहा। ससि-मुख जनु दरपन होइ रहा ।।
नयन जो देखा कवँल भा, निरमल नीर सरीर।
हँसत जो देखा हंस भा, दसन-जोति नग हीर ।।

P.T.O.

2. "बानबेध समय" का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। (14)

अथवा

"बानबेध समय" के काव्य-सौन्दर्य की समीक्षा कीजिए।

3. विद्यापति भक्त अथवा श्रृंगारिक कवि हैं, तर्क सहित उत्तर दीजिये। (14)

अथवा

विद्यापति की काव्य-भाषा पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

4. कबीर का काव्य "आँखिन देखी पर आधारित है, कागद लेखी पर नहीं", इस कथन के आलोक में कबीर-काव्य की समीक्षा कीजिए। (14)

अथवा

कबीर की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए।

5. "जायसी प्रेम की पीर के कवि हैं", इस कथन के आधार पर जायसी की प्रेम भावना का विवेचन कीजिए। (14)

अथवा

सूफी काव्य परम्परा में जायसी का स्थान निर्धारित कीजिये।

6. किसी एक विषय पर टिप्पणी लिखिए : (7)

(क) विद्यापति का राधा-रूप वर्णन

(ख) "गुरुदेव कौ अंग" का प्रतिपाद्य

(ग) "मानसरोदक" खंड का काव्य-सौंदर्य

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3067 **D**

Unique Paper Code : 2052101103

Name of the Paper : Hindi Kahani (DSC-3)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10 + 10 = 20)

(क) चार दिन तक पलक नहीं झँपी। बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना जड़े सिपाही। मुझे तो संगीन चढ़ाकर मार्च का हुक्म मिल जाय। फिर सात जर्मनों को अकेला मार कर न लौटूँ, तो मुझे दरबार साहब की देहली पर मत्था टेकना नसीब न हो। पाजी कहीं के, कलों के घोड़े-संगीन देखते ही मुँह फाड़ देते हैं, और

पैर पकड़ने लगते हैं। यों अंधेरे में तीस-तीस मन का गोला फेंकते हैं। उस दिन धावा किया था- चार मील तक एक जर्मन नहीं छोड़ा था। पीछे जनरल ने हट जाने का कमान दिया, नहीं तो_।

(ख) आसिन-कातिक के भोर में छा जानेवाले कुहासे से हिरामन को पुरानी चिढ़ है। बहुत बार वह सड़क भूलकर भटक चुका है। किन्तु आज के भोर के इस घने कुहासे में भी वह मगन है। नदी के किनारे धान-खेतों से फूले हुए धान के पौधों की पवनिया गंध आती है। पर्वपावन के दिन गाँव में ऐसी ही सुगंध फैली रहती है। उसकी गाड़ी में फिर चंपा का फूल खिला। उस फूल में एक परी बैठी है।_ जै भगवती!

(ग) गजाधर बाबू बैठकर चाय और नाश्ते का इंतजार करते रहे। उन्हें अचानक ही गनेशी की याद आ गई। रोज सुबह, पैसेंजर आने से पहले वह गरम-गरम पूरियाँ और जलेबी बनाता था। गजाधर बाबू जब तक उठकर तैयार होते, उनके लिए जलेबियाँ और चाय ला कर रख देता था। चाय भी कितनी बढ़िया, काँच के गिलास में ऊपर तक भरी लबालब, पूरे ढाई चम्मच चीनी और गाढ़ी मलाई। पैसेंजर भल्ने ही रानीपुर लेट पहुँचे, गनेशी ने चाय पहुंचाने में कभी देर नहीं की। क्या मजाल कि कभी उससे कुछ कहना पड़े।

(घ) सारा घर मक्खियों से भनभन कर रहा था। आँगन की अलगनी पर एक गंदी साड़ी टँगी थी, जिसमें पैबंद लगे हुए थे। दोनों बड़े लड़कों का कहीं पता नहीं था। बाहर की कोठरी में मुंशीजी औंधे मुँह होकर निश्चिंतता के साथ सो रहे थे, जैसे डेढ़ महीने पूर्व मकान-किराया-नियंत्रण विभाग की क्लर्की से उनकी छंटनी न हुई हो और शाम को उनको काम की तलाश में कहीं जाना न हो।

2. 'उसने कहा था' कहानी की मूल संवेदना लिखिए। (17)

अथवा

तत्त्वों के आधार पर 'तीसरी कसम' कहानी का विश्लेषण कीजिए।

3. 'वारिस' कहानी का सार लिखिए। (17)

अथवा

'दोपहर का भोजन' कहानी के कथ्य को उद्घाटित कीजिए।

4. 'तीसरी कसम' कहानी में निहित प्रेम के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए। (16)

अथवा

पारिवारिक मूल्यों के विघटन के रूप में 'वापसी' कहानी की समीक्षा कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : (10 + 10 = 20)

(क) 'घुसपैठिए' कहानी का मूल भाव।

(ख) हिरामन का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(ग) सिद्धेश्वरी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(घ) 'पंच परमेश्वर' कहानी का शिल्प।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

C

Sr. No. of Question Paper : 4138

Unique Paper Code : 12057503

Name of the Paper : अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi, CBCS, DSE-I**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भारतीय संदर्भ में स्त्री मुक्ति आंदोलन पर प्रकाश डालिए।

अथवा

आदिवासी विमर्श की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए उनके आंदोलनों के विभिन्न कारणों को रेखांकित कीजिए। (15)

2. किन्हीं **तीन** अंशों की व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) लोहा काला होता है, इस वास्ते लोहे का यह जमाना कलूकाल

P.T.O.

है। फिरंगियों के जादूचाला से तुम्हारी मति इस भेद को पल्ले नहीं पालती कि उनके लिए लोहा ताकत है और तुम्हारे लिए 'कालाकाल' तुम समझो और भेद पाओ कि कलूकाल तुम्हारे लिए अंधेरा है। मैं तुम्हें अक्ल की विद्या सिखा कर जादूगरों के फैलाये अंधेरे से उबारने के वास्ते धरती पर परगट हुआ हूँ। इसके बाहर मेरा कोई मंसूबा नहीं है। तुम सब गुज साध सैंगाजी की सीख पर नहीं चलोगे तो गारत में जाओगे।

अथवा

एक तरफ संबंध मोहब्बत की पुख्ता जमीन पर खड़ा हो रहा है, तो दूसरी ओर आत्म-सम्मान, तर्क की छेनी-हथौड़ी से संवेदना पर प्रहार कर उसे व्यथा के समंदर में धकेल रहा है। दिल कह रहा है कि आज की खूबसूरती जी लो, प्यार को दोनों हाथों की अंजुली में भरकर पी लो, न ज़ुबैर को निराश करो, न खुद को दुःखी, मगर चेतना उसे रोक रही है-भावना में मत बहो, ऐसी हज़ार हसीन रातें आएंगी, ज़रा इंतजार करो। आज के सुख के लिए कल का समझौता बहुत महंगा पड़ेगा, जहाँ दर्द के गलियारों में भटकन होगी। एबादत का सूरज बीच में ही डूब जाएगा। सारी रातें सियाह पड़ जाएँगी।

(ख) काली छाया-सी डोलती
सात भाइयों के बीच
चम्पा सयानी हुई।
ओखल में धान के साथ

कूट दी गई
भूसी के साथ कूड़े पर
फेंक दी गई।
वहां अमरबेल बन उगी।
झरबेरी के साथ कंटीली झाड़ों के बीच
चंपा अमरबेल बन सयानी हुई
फिर से घर आ धमकी।

अथवा

मारे थानेदरवा बोलाइ घरवा से हमें,
झूठइ बनावें गुनहगार ।
जेलवा में मलवा उठावै मजबूर करें,
केउ नहिं सुनत गोहार ।
देसवा अजाद अहै हम तो गुलमवां,
हमरे लिये न सरकार ।
ऐसन कौनउ जुगुति लगावा भइया 'मितई'
हमरउ करावा उरधार ।

(ग) इस्तीफे के बाद डॉ अंबेडकर ने कहा था कि जो योगदान वे भारतीय संविधान लिखकर नहीं कर पाए थे, उसे वे हिंदू कोड बिल के माध्यम से पूरा करना चाहते थे। इन तमाम जानकारियों के बाद स्वामी करपात्री जी के प्रति सातवें दर्जे में पढ़ते हुए जो अगाध श्रद्धा जागी थी, वह यकायक चकनाचूर हो गई। स्वामी करपात्री जी के बाद 'जनसंघ' पार्टी के उम्मीदवार ने,

जो रानीपुर इंटर कॉलेज के प्रिंसिपल थे, हमारे स्कूल में एक सभा की। वे बार-बार राणा प्रताप तथा रानी लक्ष्मीबाई का गुणगान करते हुए भाषण देने लगे। हमें उनकी बातें बड़ी उबाऊ सी लगती थीं।

अथवा

स्त्री के जीवन की अनेक विवशताओं में प्रधान और कदाचित उसे सबसे अधिक जड़ बनाने वाली अर्थ से संबंध रखती है और रखती रहेगी, क्योंकि वह सामाजिक प्राणी की अनिवार्य आवश्यकता है। अर्थ का प्रश्न केवल उसी के जीवन से संबंध रखता है, यह धारणा भ्रान्ति-मूलक है। जहाँ तक सामाजिक प्राणी का संबंध है, स्त्री उतनी ही अधिक अधिकार-सम्पन्न है, जितना पुरुष; चाहे वह अपने अधिकारों का उपयोग करे या न करे। समाज न उनके उपयोग का मूल्य घटा सकता है और न बढ़ा सकता है, परन्तु उन बंधनों में कुछ ऐसे भी हो सकते हैं, जो केवल उसके लिए ही नहीं, वरन सबके लिए घातक सिद्ध होंगे।

3. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखी : (10×3=30)

(क) 'सलाम' कहानी में दलित चेतना

(ख) लिंगभेद

(ग) आदिवासी और पहचान का सवाल

(घ) क्रांतिवीर मदारी पासी-अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष

(ङ) निर्मला पुतुल की कविता का स्वर

(च) अन्या से अनन्या तक में नारी चेतना का स्वर

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3426 **C**

Unique Paper Code : 62051312

Name of the Paper : Hindi A

Name of the Course : **B.A. (Programme) Hindi CBCS**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (2×7.5=15)

(क) साढ़े सात साल के बाद वे लोग लाहौर से अमृतसर आए थे। हॉकी का मैच देखने का तो बहाना ही था, उन्हें ज्यादा चाव उन घरों और बाजारों को फिर से देखने का था जो साढ़े सात साल पहले उनके लिए पराए हो गए थे। हर सड़क पर मुसलमानों

की कोई-न-कोई टोली घूमती नजर आ जाती थी। उनकी आँखें इस आग्रह के साथ वहाँ की हर चीज को देख रही थीं जैसे वह शहर साधारण शहर न होकर एक अच्छा-खासा आकर्षण-केंद्र हो।

अथवा

यदि हमारा चित्त किसी विषय में उत्साहित रहता है तो हम अन्य विषयों में भी अपना उत्साह दिखा देते हैं। यदि हमारा मन बुझा हुआ रहता है तो हम बहुत से काम प्रसन्नतापूर्वक करने के लिए तैयार हो जाते हैं। इसी बात का विचार करके सलाम-साधक लोग हाकिमों से मुलाकात करने के पहले अर्दलियों से उनका मिजाज पूछ लिया करते हैं।

(ख) अंधेर नगरी अनबूझ राजा। टका सेर भाजी टका सेर खाजा ।।

नीच ऊँच सब एकहि ऐसे। जैसे भँडुए पंडित तैसे ।।

कुल-मरजाद न मान बड़ाई। सबै एक से लोग-लुगाई ।।

जात-पाँत पूछै नहिं कोई। हरि को भजै सो हरि का होई ।।

अथवा

उसने तो अपने किए का फल पा लिया, पर मैं समस्या का समाधान नहीं पा सकी। इस बार की असफलता ने तो बस मुझे रुला ही दिया। अब तो इतनी हिम्मत भी नहीं रही कि एक बार

फिर मध्यम वर्ग में अपना नेता उत्पन्न करके फिर से प्रयास करती। इन दो हत्याओं के भार से ही मेरी गर्दन टूटी जा रही थी, और हत्या का पाप ढोने की न इच्छा थी, न शक्ति ही। और अपने सारे अहं को तिलांजलि देकर बहुत ही ईमानदारी से मैं कहती हूं कि मेरा रोम-रोम महसूस कर रहा था कि कवि भरी सभा में शान के साथ जो नहला फटकार गया था, उस पर इक्का तो क्या, मैं दुग्गी भी न मार सकी। मैं हार गयी, बुरी तरह हार गयी।

2. हिंदी कहानी के विकास के विभिन्न चरणों पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

हिंदी गद्य के विकास में पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका पर विचार कीजिए।

3. प्रेमचंद की 'जुलूस' कहानी का प्रतिपादय लिखिए। (12)

अथवा

'मैं हार गई' कहानी की केंद्रीय भाव-भूमि को स्पष्ट कीजिए।

4. 'उत्साह' निबंध की तात्विक समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'रहिमन पानी राखिए' निबंध का सार लिखिए।

5. 'भोलाराम का जीव' में निहित व्यंग्य चेतना को उद्‌घाटित कीजिए। (12)

अथवा

यात्रा-वृतांत के आधार पर 'चीड़ों पर चाँदनी' का मूल्यांकन कीजिए।

6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : (12)

(क) रेखाचित्र

(ख) जयशंकर प्रसाद और हिंदी नाटक

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3427 **C**

Unique Paper Code : 62051313

Name of the Paper : Hindi-B

Name of the Course : **B.A. (Programme) CBCS**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. हिंदी नाटक के उदभव और विकास पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

हिंदी गदय की विभिन्न विधाओं का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

P.T.O.

2. 'बूढ़ी काकी' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

'उसने कहा था' कहानी में चित्रित प्रेम के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

3. निबंध के तत्वों के आधार पर 'मेले का ऊँट' निबंध की समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'सदाचार का ताबीज' निबंध का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

4. 'अंधेर नगरी' नाटक की कथावस्तु की विवेचना कीजिए। (12)

अथवा

'बिबिया' का चरित्र-चित्रण प्रस्तुत कीजिए।

5. **किन्हीं दो** अवतरणों की संप्रसंग व्याख्या कीजिए : (2×10)

(क) बूढ़ी काकी ने सिर उठाया, न रोईं न बोलीं। चुपचाप रेंगती हुई अपनी कोठरी में चली गईं। आवाज़ ऐसी कठोर थी कि हृदय और मष्तिष्क की सम्पूर्ण शक्तियाँ, सम्पूर्ण विचार और सम्पूर्ण भार

उसी ओर आकर्षित हो गए थे। नदी में जब कगार का कोई वृहद खंड कटकर गिरता हैं तो आस-पास का जल समूह चारों और से उसी स्थान को पूरा करने के लिए दौड़ता है।

(ख) भारत मित्र संपादक! जीते रहो, दूध बताशे पीते रहो। भांग भेजी सो अच्छी थी। फिर वैसी ही भेजना। गत सप्ताह अपना चिट्ठा आपके पत्र (भारत मित्र) में टटोलते हुए 'मोहन मेले' के लेख पर निगाह पड़ी। पढ़कर आपकी दृष्टि पर अफसोस हुआ। भाई, आपकी दृष्टि गिद्ध की सी होनी चाहिए, क्योंकि आप संपादक हैं, किंतु आपकी दृष्टि गिद्ध की सी होने पर भी उस भूखे गिद्ध की सी निकली, जिसने ऊँचे आकाश में चढ़े-चढ़े भूमि पर गेहूं का एक दाना पड़ा हुआ देखा, पर उसके नीचे जो जाल बिछा रहा था वह उसे नहीं सूझा। यहां तक कि उस गेहूं के दाने को चुगने के पहले जाल में फंस गया।

(ग) अंधेर नंगरी अनबूझ राजा। टका सेर भाजी टका सेर खाजा।।

नीच ऊँच सब एकहि ऐसे। जैसे भेंडुए पंडित तैसे।।

कुल-मरजाद न मान बड़ाई। सबै एक से लोग-लुगाई।।

जात-पाँत पूछै नहिं कोई। हरि को भजै सो हरि का होई।।

6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : (7)

(क) खड़ी बोली हिदी

(ख) नई कहानी

(ग) उपन्यास के तत्व

13

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3428 **C**

Unique Paper Code : 62051314

Name of the Paper : आधुनिक भारतीय भाषा - हिन्दी - C (MIL)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi - CBCS**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं **दो** गद्य खंडों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : (2×10=20)

P.T.O.

(क) प्रत्येक देश का साहित्य उस देश के मनुष्यों के हृदय का आदर्श रूप है। जो जाति जिस समय जिस भाव से परिपूर्ण या परिप्लुत रहती है वे सब उसके भाव उस समय के साहित्य की समालोचना से अच्छी तरह प्रगट हो सकते हैं। मनुष्य का मन जब शोक-संकुल, क्रोध से उद्दीप्त, या किसी प्रकार की चिंता से दोचित्ता रहता है तब उसकी मुखच्छवि तमसाच्छन्न, उदासीन और मलिन रहती है; उस समय उसके कंठ से जो ध्वनि निकलती है वह भी या तो फुटही ढोल समान बेसुरी, बेताल, बेलय या करुणापूर्ण, गद्गद तथा विकृत-स्वर-संयुक्त होती है। वहीं जब चित्त आनंद की लहरी से उदवेलित हो नृत्य करता है और सुख की परंपरा में मग्न रहता है उस समय मुख विकसित कमल-सा प्रफुल्लित-नेत्र मानों हँसता-सा, और अंग-अंग चुस्ती और चालाकी से फिरहरी की तरह फरका करते हैं; कंठ-ध्वनि भी तब बसंत-मदमत्त कोकिला के कंठ-रव से भी अधिक मीठी और सोहावनी मन को भाती है। मनुष्य के संबंध में इस अनुल्लंघनीय प्राकृतिक नियम का अनुसरण प्रत्येक देश का साहित्य भी करता है।

(ख) जानवरों में गधा सबसे ज्यादा बुद्धिहीन समझा जाता है। हम जब किसी आदमी को पल्ले दर्ज का बेवकूफ कहना चाहते हैं, तो उसे गधा कहते हैं। गधा सचमुच बेवकूफ है या उसके सीधेपन, उसकी निरापद सहिष्णुता ने उसे यह पदवी दे दी है, इसका निश्चय नहीं किया जा सकता। गायें सींग मारती हैं, ब्याई हुई गाय तो अनायास ही सिंहनी का रूप धारण कर लेती है। कुत्ता भी बहुत गरीब जानवर है, लेकिन कभी-कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है, किन्तु गधे को कभी क्रोध करते नहीं सुना, न देखा। जितना चाहो गरीब को मारो, चाहे जैसी खराब, सड़ी हुई घास सामने डाल दो, उसके चेहरे पर कभी असंतोष की छाया भी नहीं दिखाई देगी। बैसाख में चाहे एकाध बार कुलेल कर लेता है, पर हमने तो उसे कभी खुश होते नहीं देखा। उसके चेहरे पर स्थाई विषाद स्थायी रूप से छाया रहता है। सुख-दुःख, हानि-लाभ किसी भी दशा में उसे बदलते नहीं देखा। ऋषियों-मुनियों के जितने गुण

हैं, वे सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुँच गए हैं, पर आदमी उसे बेवकूफ कहता है। सद्गुणों का इतना अनादर कहीं नहीं देखा।

(ग) जापानी वीरता की मूर्ति पूजते हैं। इस मूर्ति का दर्शन वे चेरी के फूल की शांत हँसी में करते हैं। क्या ही सच्ची और कौशलमयी पूजा है! वीरता सदा जोर भरा हुआ ही उपदेश नहीं करती। वीरता कभी-कभी हृदय की कोमलता का भी दर्शन कराती है। ऐसी कोमलता देखकर सारी प्रकृति कोमल हो जाती है; ऐसी सुंदरता देखकर लोग मोहित हो जाते हैं। जब कोमलता और सुंदरता के रूप में वह दर्शन देती है तब चेरी-फूल से भी ज्यादा नाजुक और मनोहर होती है। जिस शख्स ने यूरोप को 'क्रुसेइज' के लिये हिला दिया वह उन सबसे बड़ा वीर था जो लड़ाई में लड़े थे। इस पुरुष में वीरता ने आँसुओं और चाहों का लिबास लिया। देखो, एक छोटा सा मामूली आदमी यूरोप में जाकर रोता है कि-हाय, हमारे तीर्थ

हमारे वास्ते खुले नहीं और यहूद के राजा यूरोप के यात्रियों को दिक करते हैं। इस आँसू-भरी अपील को सुनकर सारा यूरोप उसके साथ रो उठा। यह आला दरजे की वीरता है।

(घ) पृथ्वी के उच्छवास के समान उठते हुए धुंधलेपन में वे कच्चे घर आकंठ-मग्न हो गए थे - केवल फूस के मटमैले और खपरैल के कत्थई और काले छप्पर, वर्षा में बढ़ी गंगा के मिट्टी जैसे जल में पुरानी नावों के समान जान पड़ते थे। कछार की बालू में दूर तक फैले तरबूज और खरबूजे के खेत अपने सिर की और फूस के मुठ्ठियों, टट्टियों और रखवाली के लिए बनी पर्णकुटियों के कारण जल में बसे किसी आदिम द्वीप का स्मरण दिलाते थे। उनमें एक-दो दीएं जल चुके थे, तब मैंने दूर पर एक छोटा-सा कात्रा धब्बा आगे बढ़ता देखा। वह घीसा ही होगा, यह मैंने दूर से ही जान लिया। आज गुरु साहब को उसे विदा देना है, यह उसका नन्हा हृदय अपनी पूरी संवेदना-शक्ति

से जान रहा था, इसमें संदेह नहीं था। परन्तु उस उपेक्षित बालक के मन में मेरे लिए कितनी सरल ममता और मेरे बिछोह की कितनी व्यथा हो सकती है, यह जानना मेरे लिए शेष था।

2. (क) हिन्दी गद्य के विकास में पत्र पत्रिकाओं के योगदान पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

रेखाचित्र के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'दो बैलों की कथा' किसान जीवन की जीवंत प्रस्तुति है, स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

'गंगा स्नान करने चलोगे' का प्रतिपादय लिखिए।

(ग) 'बहादुर' आधुनिक समाज के कटु यथार्थ की मार्मिक अभिव्यक्ति है, तर्क सहित समझाइए। (12)

अथवा

'वापसी' कहानी का सारांश लिखिए।

(घ) 'साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है' की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। (12)

अथवा

'गेंहूँ बनाम गुलाब' की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

3. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए : (7)

(क) 'प्रेमचंद' का साहित्यिक योगदान

(ख) हिन्दी स्वातन्त्रोत्तर नाटक

(ग) कहानी और संस्मरण में अंतर